बागेश्वरी

बागेश्वरी

(कविताऐ)

सरोज सिघवी

प्रकाशक
कुन्दन प्रकाशन
बीकानेर

प्रकाशक
कुन्दन प्रकाशन
218 - ए, शार्दुलगज
बीकानेर - 334001

सस्करण प्रथम - 1991
मूल्य 100/ (एक सौ रूपये मात्र)

मुद्रक पवन आर्ट प्रेस बीकानेर

समर्पण

अपने पिता
श्रीमान् जस्टिस कवर लाल जी वापना
के चरणो मे समर्पित है
जिनसे मैने साहस-बुद्धि, न्याय-सत्य
दया और प्रेम भरी भावनाऐ ग्रहण की ।

सरोज सिघवी

दो शब्द

अपने जीवन मे
जो कुछ महसूस किया है
एक स्वर की तरह
मेरे अन्तर्मन मे प्रस्फुटित हुआ है
मैने
शब्दो की माला मे उन्हे पिरोने का प्रयास किया है।
मेरी कविताएँ
चेतना के यर्थाथ से जुड़ी हुई है।
इनमे वास्तविकता के बोध का स्पन्दन होता है
कवि
देश, काल, समय, परिस्थितियो से अलग
अपने अन्तर्मन की अनुभूतियो से आन्दोलित होता है।
इसलिए यह कहना उचित होगा
कि
यह एक मोन राग है
जिसे मेरे तन-मन के रोम-रोम ने गाया है।

सरोज सिघवी

अनुक्रमणिका

महापुञ्ज

वह
जिसमे
बुद्धि का तप है
ज्ञान की ज्योति है
आत्मा का प्रकाश है

जो
ससार मे रहकर
मुक्त गगन के खुले प्रागण मे
विहान करता है

जिसमे
अपनी भावनाओ को
उद्बोधित करने की क्षमता है

जो
सृष्टि और समिष्टि का
उपासक है
जो
ससार का सबसे सवल और प्रवल व्यक्तित्व है

ऐसे महापुञ्ज को
अर्पित है
काल का एक -एक पल
जिसका कोई मूल्याकन नही।

सगीत

आत्मा,
शान्ति
और
पवित्रता का नाम ही
जीवन है

सगीत की लय पर
धड़कन
चलती रहे

बड़े ख्याल की तरह मन्द्र
छोटे ख्याल की तरह द्रुत
आलाप की तरह शान्त
और
तानो की तरह वक्र

अन्त मे
सगीत और जीवन
एक रस हो उठे ।



भविष्य

अप्राप्य वस्तु की कामना कर

स्वय को
घुलाना
मूर्खता है

भूत को देख

वर्तमान को देख

और

भविष्य की
कामना कर ।



पवित्र

पवित्र
वह है

जो
सम्मिश्रण मे एकात्मकता ढूँढे

प्रकृति के हर दृश्य मे,
जीवन के हर अग मे
एकात्मकता ढूँढे

एक नाम
एक दृश्य
एक खेल हो
वही
महान् है ।



चरम-सीमा

जीवन की पूर्णता
प्यार मे है

प्यार की पूर्णता
दर्द मे है

दर्द की अभिव्यक्ति
एकता मे है

एक चाह
एक धड़कन
एक लक्ष्य

जीवन की
चरम सीमा है।



अनुभूतियाँ

मानवीय
भावनाओ का मूल्यांकन
ठोस
वैज्ञानिक तथ्यो के आधार पर

नहीं
किया जा सकता

यह
वह
सूक्ष्म अनुभूतियाँ हैं
जो
देखी और सुनी नही
महसूस की जाती हैं।



अनुभूति

क्षणिक अनुभूति
अपनी छाप
सदा के लिए छोड़ देती है
धड़कता हुआ दिल जिसमे चेतना है
ग्राह्य करता है

जीवन का हर क्षण
एक कहानी है
किन्तु अन्तर्मन मे उतरने वाले क्षण,
अमिट होते हैं

समय गुजरता है
स्मृति
अन्त स्थल पर
चित्र के समान छप जाती है

वातावरण बदलता है
दृश्य बदलते हैं
मानव का रूप
और वातो का स्वरुप भी बदल जाता है

अनुभूति
जिसमे चेतना है
अन्त स्थल की गहराई मे
सदैव नवीन बनी रहती है।

❊

एक बाँस

एक बाँस
पूरे तवू को
अपने ऊपर उठा लेता है
एक पेड़
सैकड़ो पक्षियो को पनाह देता है

एक सूर्य
सृष्टि को नव जीवन देता है
एक प्रकाश
समष्टि को
आलोकित करता है

एक प्राण
जीवन मे
चेतना भरता है
एक आत्मा
व्यक्ति को
जागृत रखती है

एक प्यार
जीवन मे बहार लाता है
एक समर्पण
व्यक्ति को पूर्ण बनाता है ।



शब्द

शब्द वही हैं
स्वर बदल गये हैं

रुप वही है
स्वरुप बदल गये हैं

धारणा वही है
विचार बदल गये हैं

सूर्य वही है
मौसम बदल गये हैं

दुनिया वही है
लोग बदल गये है ।



पीडा

पीड़ा
पराग है

मानवता को सुगन्ध देती है

खिलने का अवसर देती है

आत्मा को शान्ति देती है

सुख की राह दिखाती है

अज्ञानता
शून्यता है

जीवन की जड़ता है
जैसे
खिला हुआ पेड़
जिसमे वाणी नहीं हृदय नहीं
जीवन शेष है।



युग

युग बदलते है
अध्याय खत्म होते हैं

हर क्षण
घटन-विघटन चलता है
जीवन का हर मोड़
एक नये अध्याय से प्रारम्भ होता है

बीती हुई बाते
रेल की खिड़की से दौड़ते वृक्षो सी
छूटती जाती है

स्टेशन से निकले मुसाफिरी की तरह
एक नई आशा
एक नई अनुभूति
जीवन को प्रेरणा देती है



पञ्चम स्वर

नील नभ मे तैरते
धवल टुकड़ो मे
तेरे
चेहरे की हँसी देखती हूँ
सफेद बादल
मुझे बहुत पसन्द हैं
किसी के मन का
स्थिर
सुन्दर पञ्चम स्वर
दिखलाई पड़ता है

सारी क्रियाऐ
जो तू बड़े सुन्दर ढ्ग से कर रहा है
मुझे
बहुत पसन्द हैं

मन मे छुपी हुई खुशी
मन का धन बन जाती है
जीवन के बाद मृत्यु,
मृत्यु के बाद जीवन
यह अद्‌भुत खेल
तेरे मन की पैशाचिकता दर्शाता है
कि
तू
देव हो कर दानव भी है ।

❄

सुचिन्दरम्

तू
दूर है
तेरी अनुभूति
सदा मेरे पास है
सुचिन्दरम् की वह शाम
जब मन्दिर
दीपमाला से आलोकित था
शहनाई के मधुर स्वरो मे
प्रभु की आरती निकाली गई थी
उस समय
मन मे जो अपार श्रद्धा उत्पन्न हुई
आजीवन
चित्रित हो गई
श्रद्धा का वही अश
तुझमे पाती हूँ
अगारे के समान जलती हुई तेरी दो आँखे
जो रोष से भरी हुई हैं
जागृत करती है मेरे विवेक को
कि मुझे आगे बढना है
निरन्तर
क्षितिज के उस पार
जहाँ शून्य है
वहीं मेरी मजिल है ।

*

मिट्टी

मिट्टी बोलती है
कुछ बोलती है
शब्द अस्पष्ट से
अनायास ही उभर आते हैं

मैंने सुनी है
इन भुरभुरे कणो की आवाज
जो निरन्तर कही जा रही है

धरती जो सह रही है
टीस उसकी छाती पर लिखी है
आँखे खोल
पढ़ ले अनकही कथा
जो निरतर कही जा रही है।

साधु की तरह खड़े मौन वृक्ष
गवाह है तेरे गुनाहो के
कि
आज भी तू वही जा रहा है
जहाँ से लौट आया था।

सत्य

सत्य
मानवता के उत्थान की चोटी है
आत्मा का प्रकाश है
दिव्यता का ओज है
धैर्यता की सीमा है
सृष्टि का अद्भुत नाद है
जो निरन्तर बज रहा है
        उसको समझने वाला
        उसको चाहने वाला महान् है
        महान् है, महान् है।
सूर्य मे तप है
अग्नि मे तेज है
प्रकाश मे ज्योति है
वायु मे जोर है
आकाश, शून्य है
        ऋषियो मे सिद्धि होती है
        साधु मे सत्य है
        सन्त मे ज्ञान है, सत्य है,
इन्सान जानवर है
आदमी हैवान है
मन पागल है
जीवन-मृत्यु, सुख-दुख सव सत्य है
        ईश्वर की महत्ता
        जिसकी अजलि के हम पुष्प हैं
        सत्य ही मे निहित है।



केसरिया फूल

मन की रुपहली गॉठे खुल पड़ी
अवीर और गुलाल
चारो ओर बिखर पड़ी

बीच मे मुस्कुराता केसरिया फूल
मुझे बहुत पसन्द है

मुझे
इस फूल से मुझे बहुत प्यार है
क्योकि
यह मेरे प्रिय रग का है

जो
मेरे अपने है
उनमे
मुझे बहुत प्यार है ।



प्रेरणा के पख

बगुले से बादलो ने
प्रेरणा के पख दिये
मन रे
उड़ जा मुक्ति के छन्दो मे
व्योम वाहिनी प्रतीक्षा मे है

तिमिर का बन्धन कटा
रवि का मुखड़ा दिखा
नाचती रश्मि किरणो मे
भोर का सौरभ उड़ा



चैत्र की उड़ती वेणु
पराग की मीठी महक
वृक्षो का नव श्रृगार
कोयल का पञ्चम स्वर
किसकी सौरभ गाथा है

कोमल कुसुमोकी नियति है
मधुमक्खियो का मनोरजन है
या
जगती के हृदय मे छुपी हुई
महान् कोमल भावना है ।



विश्वास

प्रात की वेला मे
सूर्य
नवजीवन का सदेश लाता है
तेरी छवि
मेरे मानस पटल पर शोभित हो
मुझे
नव जागृत करती है

जीवन का ठहराव
एक विराम बन गया है
तेरा साहस
मुझमे
धैर्य प्रदान करता है

जीवन
विविधता लिये
प्रतिदिन
उपस्थित होता है
तेरा विश्वास
मुझे
एकाग्र वना देता है।

मुरली

शाम ढ़ल गई है
जमुना का किनारा है
राधा भी है
श्याम की मुरली नही

मुरली बजेगी
तो
राधा नाचेगी
राधा नाचेगी तब स्वर उठेगे
स्वर उठेगे तब गीत बनेगा

सन-गीत मे,
स्वर, नृत्य और गीत
तीनो झूम उठेगे
तब
दुनियाँ समझेगी
जीवन क्या है ?
नृत्य क्या है ?
बिजली क्या है ?

एक क्षण मे
आत्मा को छूकर
जो
जीवन को प्रकाशित व

❋

पुरवइया

पुरवइया के पार
झरते मेघ
काली रात
गहन अन्धकार
पानी
धारा मे वह कर
अपनी मजिल पा रहा है
मेरा जीवन
क्षण भगुर सपना
पल-पल टूटता है
सजोने का विश्वास
निराशा की अनन्त गहराई मे
विकराल दावानल सा उठता है
एक किरण
बस एक किरण
बिजली बन
जीवन के अंधियारे मे खो जाती है
तब एक राग
विराग बन
हृदय मे छा जाता है
जिसके स्वर
पहुँचते है
केवल
तुम तक।

❁

मन की पाँखे

सूने से इस जीवन से
कैसे बाधूँ मन की पाँखे
जो उड़ती है नील गगन मे
खुशियो के अनन्त समन्दर मे

बौराया सा पागल पछी
फिरता जग के कोने मे

टूटी माला के सच्चे मोती
मिला न कोई मन का जौहरी

सूनी बगिया के मुरझाये पौधे
मिला न कोई मन का माली

फिर इस सूनेपन से
कैसे बाधूँ अपने कोमल मन को
जो,
उड़ता है नील गगन मे
खुशियो के अनन्त समन्द मे ।



मोक्ष की याचना

नीलाभ धरती के
रक्ताभ होठो पर
किसकी स्नेह मालिका है
फूलो का सौन्दर्य
मेहन्दी की खुशबू
किसकी प्रणेता है

मैने
कुछ नही माँगा
तुमने वहुत दिया

इतना विशाल हृदय
मेरे पास नही है
कि जिसमे
तुम्हारा प्यार सजो सकूँ
काल ने तिनका-तिनका मुझे चीरा है
क्रूरतम विधाओ ने मुझे कचोटा है
अव
इस शून्य मे
मै तुमसे
मोक्ष की याचना
करती हूँ



जीवन

जीवन
टेढ़ी-मेढ़ी लकीरो का एक पुञ्ज है
जो
शून्य से प्रारम्भ होकर
शून्य पर ठहरता है

बीच का ठहराव
मात्र एक कल्पना है
जो
स्वप्न की तरह क्षण भगुर है

नितान्त अकेलापन
मरते हुए व्यक्ति महसूस करता है

छलावे की तरह
यह दुनियाँ
बरवस ही
मिट जाती है।



झूठ

झूठ के दो अक्षरो मे
मेरा जीवन
इस तरह गुथ गया है
कि
ऊपर से नीचे तक
मै
झूठ की माला मे
गुथ गई हूँ

मुझे
आवश्यकता है
सत्य के ढ़ाई अक्षर की
जिनसे,
झूठ के दो अक्षर काट सकू

शेष
आधा जीवन

आधे अक्षर की तरह
सुरक्षित बच सके ।



समुद्र

समुद्र
तेरे बीच मे,
अकेला खड़ा हूँ
मेरा
माल से लदा हुआ जहाज
तेरे बीच मे
अटक गया है
नहीं जानता था
तू इतना छिछला होगा
कि
लहरो द्वारा
मजिल तक पहुँचाना तो अलग
अपने ऊपर ही टिका लेगा
अब
मैं तेरे ऊपर कभी नहीं आऊँगा
गर्व मे चूर तू
चिघाड़ते रहना
किनारे से सिर टकराते रहना
मैं
हवा मे
हवाई जहाज द्वारा उड़ कर
अपनी मजिल,
प्राप्त कर लूगा ।

❋

सूनापन

सूनापन
हृदयमे पैठ गया है
जो
दीमक की तरह
मुझे
खा रहा है

खोखला हृदय
बुझी आँखे
ढीला शरीर
अनावश्यक जिये जा रहा है

मासूम उमगो का भयानक अन्त
बहुत डरावना है
प्रफुल्लित सवेरा

विना खिले ही काली रात मे बदल गया है
यह दु ख अति गहरा है ।



दिन

दिन
आते हैं और जाते है
समय
हवा मे तैरता हुआ
पड़ौसी की छत के मुँडेर पर
जा बैठा है
अनजाने ही
मैं चालीस वर्ष की प्रौढ़ा हो गयी हूँ
मेरे सपने
जो खिले भी न थे
राख की गर्त्त मे डूब गये हैं
प्रफुल्लित सवेरा
काली रात मे बदल गया है
प्रतिदिन मेरे हृदय को
धीमी आँच पर पकाया जाता है
जिसकी भाप मे
मेरा रोम-रोम खौलता रहता है
भविष्य की डोर
मुझे बाँधे रहती है
हृदय के अन्तराल मे,
एक छोटा सा अश
मेरी साधना का
जीने को प्रेरित करता है कि
साधना ही सफलता की जननी है।

जीवन-चक्र

टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता
जिस पर मैं चल रहा हूँ
हर ओर खड्डे हैं

जिनमे पानी भरा हुआ है

चलकर
न तैरकर
किसी भी तरह
पार नही किया जा सकता

स्थिरता
जिसमे जड़ता है शेष है

मै मतवाला
जग से न्यारा
बढ़ रहा हूँ
बढ़ता ही रहूँगा

मजिल
मिले न मिले
पृथ्वी गोल है

जीवन चक्र भी गोल है

मनुष्य

शून्य से जन्म लेकर
शून्य मे मिल जाता है

एक बिन्दु मृत्यु
यही पर लौट कर आना है

मुझे कोई डरा नही सकता

चल रहा हूँ
चलता ही रहूँगा।



तरग

उमगो की तरगे
क्रोध के बादल से टकरा कर
अश्रु बनकर टपकती है

स्नेह का आश्रय
जिसकी छाया मे
मैंने
स्वय को सवारा था

टूट गया है
रीतापन
हृदय मे छा गया है

मै
ढूढती हूँ
स्वय को
और
अपने भविष्य को
जिसमे मुझे जीना है ।



निराकार

प्रभु
तेरे स्नेह की छाया
महसूस करता हूँ
मेरे दिल के आस-पास
और
अनायास ही
श्रद्धानत हो उठता हूँ
युग-युग से
तेरी उपासना
करता रहा हूँ
सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे
तुझे ढूँढा
आखिर
भक्ति सफल हुई
मैने
तुझे पा ही लिया
अब स्वय को
तुझे अर्पित करता हूँ
जिससे
कोई मोह माया मुझमे शेष न रहे
और
निराकार भाव से
तेरा ध्यान करूँगा।

❁

धरती और आकाश

धरती और आकाश
एक हो गये है
बीच की दीवार
भरभराकर गिर पड़ी है
धरती की गन्दी हवा ने
आकाश को दूषित कर दिया है
कलयुग
धरती से उठकर
आकाश मे पहुँच गया हे
मिट्टी
आकाश मे इकट्ठी हो रही है
जोर से आँधी चलेगी
धरती और आकाश दोनो डूब जायेगे
सर्वत्र अन्धकार फैल जायेगा
मानव सभ्यता
राक्षसी अट्टहास के साथ
पाताल मे घुस जायेगी
आदमी जानवरो की तरह एक दूसरे का खून पीते हुए
अपनी माँद से डकार लेते हुए निकलेगे
चील कौव्वे पेड़ो से अपना डेरा छोड़कर
घरो मे घोसले वना लेगे
और आदमी
अपनी भाषा छोड़कर
पक्षियो की तरह
चहचहाने लगेगा ।

एक नाव

चारो और विशाल समुद्र है
उत्ताल तरगे
मानो आकाश को छू रही है
सूर्य
पश्चिम मे डूब चुका है
सतरगी रग फीके पड़ गये हैं
कालिमा
धीरे-धीरे फैल रही है
ससार
निस्तब्ध सो चुका है
एक नाव
पतवार रहित हिचकोले खाती हुई
भवरो की तरफ बढ़ रही है
नाविक के हाथ
ऊपर की ओर उठे हुऐ है
नेत्र
मुँदे हुए हैं
होठो से अस्फुट ध्वनियाँ निकल रही हैं
सोच रहा है क्या होगा ?

मजिल
जिसकी चाह मे मे चला था
खो जायेगी

काल

मुझे डस लेगा

मेरे अन्त की
मासूम खुशियाँ
मेरी हड्डियो के साथ-साथ
चूर-चूर हो जाएगी

फिर भी
में स्थिर हूँ

ईश्वर मेरे साथ है

अन्जाम चाहे जो हो
बढ़ता ही रहूँगा ।



मेरा जीवन

मेरा जीवन
साँप के अडो की तरह गुथा हुआ है
जिन्हे
मेरी
असमर्थता रूपी सर्प
स्वय ही खा जाते है

हिमालय की चोटी
बहुत ऊँची है
बर्फ
अति गहरी है
चट्टाने
सपाट हैं

माँस
पिघल चुका है
हड्डियाँ
गल चुकी है
मस्तिष्क
शून्य है
जीवन बिन्दु
अपनी राह
खो चुका है।

दु ख

दु ख रूपी फोड़े के अन्दर से कविता
मवाद के रूप मे
रिस-रिस कर,
वाहर
टपकती है

मैं
कुछ नहीं जानती हूँ
अपना मस्तिष्क
कष्टो की नदिया मे
डुवो दिया है

मेरी सव इन्द्रियाँ
सो चुकी हैं
एक चेतना
जिससे मेरी धड़कन चल रही है
कुछ
महसूस करवाती है
ओर वही
कविता
वन जाती है।

कुँआ

कुँआ
तेरा आयत कितना छोटा है
फिर भी
तू
अति गहरा है
यह
मै देख रहा हूँ

तेरा पानी पीकर
मृत्यु शय्या पर पड़ा रोगी
चेतन
हो जाता है
किन्तु
समुद्र
विशाल होते हुऐ भी
व्यक्ति को
जीवन
नही दे सकता



आज की घटना

आज की घटना
कल का इतिहास है
जिसे हम भूल चुके है
वही घटना चक्र बनकर
हमारे सामने आया हे

कल शाम
जिन मुर्दो को गाड आये थे
सवेरे
वही जिन्न बनकर ससार मे तहलका मचा रहे हैं

हिटलर और मुसोलोनी
वर्षो पहिले कब्र मे सो चुके हैं
उनकी रूहे
आज भी मडरा रही हैं हमारे इर्द-गिर्द
कोई नया चोला पहिनकर

इतिहास
बन्द किताबो के पन्नों से निकल कर
घूम रहा है हमारे सम्मुख
उनींदी आँखो से
अतीत से बेखबर
हम सोच रहे हैं
यह
कोई नया घटनाचक्र है ।

आदर्श

मै
आधुनिक मानवता का कलक हूँ
मुझमे
राम का आदर्श है
सीता की भक्ति है
प्रहलाद की लगन है
और
बुद्ध का त्याग है
मै
मध्ययुग की मीरा हूँ
मैने अदृश्य गिरधर से प्यार किया है
मे
एकलव्य हूँ
मैंने मिट्टी के द्रोणाचार्य को पूजा है
मै
अर्जुन हूँ
मुझमे एकाग्रता है
मै
अभिमन्यु हूँ
मेने दुश्मनो के व्यूहो को तोड़ा है
मै
अरस्तू हूँ
मुझमे दर्शन है
मैं
प्लेटो हूँ
मुझमे ज्ञान है

मैं
वीथोवन हूँ
मैंने अदृश्य संगीत को देखा है।
मैं
शेक्सपियर हूँ
मुझमें कल्पना है
मैं
पिकासो हूँ
मैंने कल्पना को रंग दिया है
मैं
गाँधी हूँ
मुझमें सत्य है
मैं सुभाष हूँ
मुझमे क्रान्ति है
मैं
ईसा हूँ
सूली पर चढ़ाया गया हूँ
मैं
सुकरात हूँ
मैंने सैंकड़ों बार विष पिया है
फिर भी जिन्दा हूँ
क्योंकि
राम को
अपने हृदय में अंकित किया है
सत्य मे जीवन को ढाला है
मैं सम्पूर्ण हूँ
क्योंकि प्राचीन मानवता का आदर्श हूँ।

८

सकुचित दायरा

प्रभु
तू मुझे
बहुत अच्छा लगता है
तेरा विशाल वैभव
मै
मन्त्रमुग्ध निहारती हूँ

तेरे राज्य मे उड़ते उन्मुक्त पक्षी
मेरी मासूम खुशियो को
उजागर करते हे
एक बार फिर
मे
अपना सकुचित दायरा तोड़कर
तुझे
समर्पित
हो जाती हूँ

तब
दुनिया मुझे पागल कहती है
और पागल खाने पहुँचा देती है
वाह रे दुनियाँ ।
वाह रे लोग ।

❈

नीव

हृदय सागर का पानी
क्रोधाग्नि मे जल कर
भाप बन कर उड़ गया है
शेष काई मे
मन की मछलिया तड़प रही हैं

मानव पापो से
वायुमण्डल दूषित हो चुका है
आध्यात्म
मिट चुका है
सुख समृद्धि
जिसकी चाह मे प्राचीन लोग
हवन और भजन करते थे
नगे नाचो मे परिवर्तित है

सभ्यता
जुऐ और शराब की बोतलो मे बन्द है
आदमी
अपने अतीत और भविष्य को भुलाकर
वर्तमान से जूझ रहा है
जबकि वर्तमान
अतीत के ठोस पायो पर टिका हुआ है
जितनी सुदृढ़ नींव होगी
उतना ही मजबूत मकान होगा।



जिन्दगी की कहानी

हिमालय से निकली
उन्मुक्त गगा
बॉध मे बन्धकर रह गई

मनुष्य का उड़ता हुआ मन
धरती की रस्मो मे उलझकर रह गया

जिन्दगी की कहानी
अधुरी रह गई

जिन्दगी हम जीते है जानवरो की तरह
खूँटे से बन्धे हुए
लोगो का मुँह देखते हुए

अपनी कोई इच्छा नही
अपना कोई अस्तित्व नहीं
जिधर नकेल घुमायेगे
चल पड़ेगे ।



खडित

समय निर्वाध चल रहा है
वक्त की तेज रफ्तार मे
व्यक्ति
निरन्तर
उत्कर्प की ओर दोड़ रहा है
मैं
अनवरत खडित हूँ

एक पल का विश्राम
कहर वन कर
टूटता ह

मेरी हजार आत्माऐ
तन छोडकर,
अनन्त की ओर
भागती
दिखलाई पड़ती हें

इस तूफान के वाद
अपने को
विस्तर मे
मे
जिन्दा लाश
दिखाई देती हूँ

*

धुन्ध

क्षितिज के उस पार
धुन्ध ही धुन्ध है

धुन्ध मे
मन कुछ ढूँढता है
अपना खोया वर्तमान
पाना चाहता है

वास्तविकता का धरातल
अति कठोर है

इच्छाऐ
कल्पनाओ के साथ उड़ती है

मन पखो को काट कर
ऐसा लग रहा है
जैसे
अपना सिर-धड़ से अलग कर दिया है ।



छलावा

कल,
तू नहीं था
आज भी नहीं है
मेरी मध्यम भावनाओ ने
मुझे ही छला है

अन्तस की खुशियां को
तुझमे ढाल कर,
खुदको ही छला है

इस छलावे मे मेरा भला है
हवा मे तैरते हुए
तुम्हारे अक्स मुझ तक पहुँचते हैं

सतापो से दूर
मैं
केवल मै
तुम्हारे पास होती हूँ

तेरे पास होने का भ्रम
मकड़ी के जाले की तरह
मेरे चारो और लिपटता है
और मै
आँखे मूँद कर सो जाती हूँ।

*

आँधी

तीव्र वेग से आँधी चल रही है
आकाश रेतीले बादले से आच्छादित है
वायु मे ककड़ और पत्थर उड़ रहे हैं
दिशाऐ
आहत सी चिल्ला रही हे
वृक्ष मजबूर से हिल डुल रहे हैं।
पत्तो की कपकपाहट और थरथराहट से
वातावरण मे अजीब सा शोर हो रहा है
पक्षीगण
भयभीत से डालियो पर चिपके हुए हे
ऐसे मे
मेरी जीवन नोका बिना
मॉझी और बिना पतवार के
लहरो के थपेड़े स त्रस्त
इधर-उधर डोल रही है
इस अन्धेरी रात मे भी
बड़े-बड़े भंवर
मुझे चारो ओर दिखाई दे रहे हैं
नाव मे लुढ़कते हुए अब मै थक गया हूँ
दूर कही अपनी मजिल का जो दीपक मैने देखा था
वह भी बुझ गया है
मुझे इन लहरो म फँस जाना होगा
तब क्यों नही, स्वेच्छा स
आत्म हत्या करलू, मेरा विश्वास बना रहेगा
कि मैं भाग्य के कोप का भाजन नही बना

वृक्ष की पुकार

प्रकृति
तेरी निष्ठुरता
मैंने देखी है
बरसो तेरी गोद मे पला-बढ़ा
तेरे प्यार से हृदय को सीचा
विश्वास का एक घरौंदा
तेरे आश्रय मे बनाया
लेकिन
एक ही ऑधी ने
मेरी समस्त जड़े उखाड़कर
मुझे
धराशायी कर दिया है
तेरी यह कठोरता
मै
सह नही सकूगा
मेरे कोमल पत्ते
जिन्हे
मैने
अभी-अभी जन्म दिया था
कुम्हला गये हैं
मैं
सूखकर
निर्जीव हो गया हूँ।

:

यथार्थ

दो आँखे
रसभरी
सागर सी विशाल
हिमालय की तरह दृढ़
जीवन का सदेश देती हुई
मेरे सामने खड़ी है

मैं
बहुत तुच्छ हूँ
मेरे विचार
नष्ट हो चुके हैं
शरीर सूख गया है
कमर झुकी हुई है
वाणी मौन है

दुनियाँ का धोखा सहते हुए
हीन भावना अन्त मे पैठ चुकी है
अपने नेत्र ऊपर उठाने की क्षमता
मुझमे नही है
ससार से मैं निर्लिप्त हो चुकी हूँ
फिर भी जीना चाहती हूँ
वास्तविकता वन कर
उन सुन्दर आँखो मे झाँख कर
जीवन की यथार्थता देखना चाहती हूँ

एक कहानी

आग
बुझ चुकी है

कोयले
ठण्डे है

शरीर
पीला है

खून
सफेद है

हड्डियाँ
गल चुकी है

माँस
पिघल रहा है

नसे
फट चुकीं हैं
दिमाग
डोल रहा है

एक कहानी
एक कल्पना
एक छाया
वास्तविकता वन गई है।



शून्य की घड़ियाँ

जिसे बिखरना है
बिखर जाना चाहिये
जिसे टूटना है
टूट जाना चाहिये
गन्दगी
धुलनी चाहिये
दुर्गन्ध
मिटनी चाहिये
वातावरण
साफ होना चाहिये
मैं
अनावश्यक
दुनियाँ पर लदा हुआ
चला जा रहा हूँ
धरती की धूल
मुझे बुला रही है
आकाश की दो बाँहे
मेरा आह्वान कर रही है
शून्य की घड़ियाँ
मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं
मुझे मिट जाना चाहिऐ
मुझे टूट जाना चाहिऐ ।

❃

उजालदान

सूर्य
आगे बढ़ चुका है
लेकिन
अपने कमरे के उजाल दान से
हम
दिन निकलने की प्रतीक्षा कर रहे है

दुनियाँ
आगे बढ़ चुकी है
लोग
काम धन्धो पर जा चुके हैं
हम
विस्तर पर पड़े हुए
चाय की प्रतीक्षा कर रहे हे

दिन कब निकलता हे
रात कब होती है
हम नही जानते
अपने कमरे के उजालदान से
दिन निकलने की प्रतीक्षा करते रहते है
उजालदान
अगर बन्द हो
तो पूरा दिन ही रात नजर आता है ।



रात

रात को गहरा दो
दुनियाँ को मौत की चादर से ढ़क दो
व्यक्तियो के दिल
बुझ चुके हैं
उमगों की ज्योति
निराशा के कुएँ में डूब चुकी है

वातावरण स्तब्ध है
व्यक्तियो के होठ सिले हुए हैं
जीभ
तालु से चिपकी हुई है
किसी को किसी से मतलब नहीं है

त्याग
नि स्वार्थ की बाते
शायद
कल का इतिहास थीं।
आज
अपना जनाजा
अपने सिरो पर रक्खे हुए
मातमी धुन मे गाते हुए
कब्र की ओर बढ़े चले जा रहे हैं
क्या हमारा यही इतिहास होगा ?



वर्तमान

वर्तमान
अतीत के समुद्र मे
मरे हुए बगुले के तैरते हुए पखों के समान है
भविष्य
एक कुँए मे
समुद्र के डूबने की तरह है

मैं
एक पत्थर की चट्टान हूँ
जो निरतर
मौत की तरफ
लुढ़क रही है

कभी-कभी
ठहरने के लिये
हाथ-पाँव मारती हूँ
लेकिन दरिंदी दुनियाँ
जबरन
मुझे
धकेल
देती है



योग्यता

ढलती उम्र
बालो की सफेदी
चेहरे का पकाव
उदासीनता
मनुष्य की योग्यता नही दर्शाते

आकाक्षाऐ
जो
परिस्थितियो के बोझ से
घुटती रहती है
मनुष्य को
खोखला बना देती है

एक बेल की तरह मजबूर
जीने का लम्बा रास्ता
इसलिय काट रहा है
क्योकि
वह जीवित है

उसका कोई लक्ष्य नही
कोई उद्देश्य नही
जी रहा है
क्योकि वह जीवित है ।



उदासी

उदासी
वह खाई है
जिसमे गिर कर
व्यक्ति
एक ककाल
बन जाता है

समय
रुकता नहीं है
पख लगाकर उड़ जाता है
और
पहुँचता है वहाँ
जहाँ
व्यक्ति के नन्हे हाथ
नहीं पहुँच सकते
केवल भावना के पख
उस पल को प्राप्त कर सकते हैं

तब
जीवन
व्यर्थ नहीं जाता।



फसल

मन
टूटे सपने से तेरा क्या रिश्ता
भूल जा
पराये
बेगाने हैं
उन्हे
अपनी यादो मे सजोने से क्या फायदा

पारा
गिरकर बिखर जाता है
समेटा नही जाता

रस्सी जलकर राख हो जाती है
शेष बचती नही
जो टूट गया
वह खो गया है
अब नही मिलेगा

बासी यादे मिटानी होगी
स्वय को निर्मल करना होगा
तन्तुओ की जड़ो मे खाद डालनी होगी
तभी खेत मे हरियाली जगेगी
और नई फसल पैदा होगी ।



तग धरती

तग धरती
मैला आकाश
निर्विकार आँखे
मूढ़ सन्तति
इस पीढ़ी का क्या होगा ?
भीड़ भरा कोलाहल
धुँऐ के वादल
खाँसते फेफड़े
बूढ़ी साँसे
नव पीढ़ी को कौन राह दिखायेगा ?
कदम-कदम पर चौराहे
जीवन का भटकाव
मानसिक अशाति
चेहरे का तनाव
जीवन मे क्या स्थिरता लाएगा ?
स्वय से जूझता
स्वय को धिक्कारता
व्यक्ति
प्रतिपल
अतीत के गर्त्त मे
डूबता जाता है
मानव सभ्यता का क्या यही इतिहास है ?

*

फसल

मन
टूटे सपने से तेरा क्या रिश्ता
भूल जा
पराये
बेगाने है
उन्हे
अपनी यादो मे सजोने से क्या फायदा

पारा
गिरकर विखर जाता है
समेटा नही जाता

रस्सी जलकर राख हो जाती है
शेष बचती नही
जो टूट गया
वह खो गया है
अब नही मिलेगा

बासी यादे मिटानी होगी
स्वय को निर्मल करना होगा
तन्तुओ की जड़ो मे खाद डालनी होगी
तभी खेत मे हरियाली जगेगी
और नई फसल पैदा होगी ।



तग धरती

तग धरती
मैला आकाश
निर्विकार आँखे
मूढ़ सन्तति
इस पीढ़ी का क्या होगा ?
भीड़ भरा कोलाहल
धुँऐ के बादल
खाँसते फेफड़े
बूढ़ी साँसे
नव पीढ़ी को कोन राह दिखायेगा ?
कदम-कदम पर चोराहे
जीवन का भटकाव
मानसिक अशाति
चेहरे का तनाव
जीवन मे क्या स्थिरता लाएगा ?
स्वय से जूझता
स्वय को धिक्कारता
व्यक्ति
प्रतिपल
अतीत के गर्त्त मे
डूबता जाता है
मानव सभ्यता का क्या यही इतिहास है ?



मजबूत नींव वाला मकान

इच्छाओ की लाशो के ढेर पर
बैठी हुई मैं सोच रही हूँ
कि
सामने फैले पाताल-फोड़ समुद्र मे
डूबने से क्या फायदा ?

तालाब मे मगरमच्छ रहते हैं
रेवड़ मे बकरियाँ चरती हैं
गलियो मे कुत्ते रोते हैं

जो इसान हैं
उन्हे
स्वच्छ आकाश चाहिए
स्वतत्रता का एहसास चाहिए
और
एक मजबूत नींव वाला
मकान चाहिए
क्योंकि
प्रकृति ने ही मानव को उपजाया है
जीवन को सुन्दर बनाया है
आकाक्षाओ की लौ को जगाया है

फिर
मानव-मानव मे भेद क्यो ?

मुक्ति के प्रागण मे

चाहो के बादल
जहर भरी जिन्दगी मे इस तरह उठते है
जैसे
चाय के प्याले से उठती हुई भाप
एक अव्यक्त कसाव
घुटन भरे जीवन की सॉसो मे
जीना चाहता है

मुक्ति के प्रागण मे
साँसो का पछी
अविरल तैरना चाहता है

इतिहास
पुराना नही है

कल ही
मृदग से उठती थापो के साथ
मेरे पैर
घण्टो नाचते रहते थे
आज भी
उसी परिवेश मे
मुक्ति के खुले प्रागण मे
मैं
फिर से तैरना चाहती हूँ

एकता का स्तोत्र

इच्छाओ का घुटना
उतना ही दर्दीला है
जितनी कैंसर की पीड़ा

दर्द
दवाओ से दूर किया जा सकता है
लेकिन
मन की घुटन का उफान
कही नही मिलता

अनपढ़ ईव
अति भाग्यशाली थी
जिसके चेहरे पर
आदम ने
भावो के रग बिखेरे थे
उमगो की कविताऐ लिखीं थी

हम
सभ्य प्राणी
कागजो ने रो-रोकर दम तोड़ देते है
हमारे भाव पढ़कर
दुनियाँ खुश होती है
लेकिन जो दर्द कवि ने सहा है
समझने वाला कोई नही है

हम से अच्छी
यह धरती है
जो
अपने भाव
रग-बिरगे फूल, हरे-भरे पेड़, लहराती नदियो
और
गगन चुम्बी चट्टानो से दर्शाती है

हम सभ्य प्राणी
आपस मे झगड़ते रहते है

काश !

हमने समझा होता
असभ्य पक्षियो की चहचहाहट मे

एकता का अद्भुत स्तोत्र
सगीत का मधुर तराना
और
भावो का आकठ नाद है ।

*

मनुष्य

मनुष्य
जिनकी आत्मायें हीन होकर
रसातल मे जा रही हैं
एक धुआँ उठता है
उनके तन से
और कालिख
चेहरे पर होती है
पतन की कहानी
पुरानी नही है
कल ही
मैने
सत्य का बीज बोया,
स्नेह रस से सींचा
और
प्रेम की बासुरी से मन को
नहलाया था
आज झूठ की गर्द मे
सच का सूरज डूब गया है
अपने घर की नीवे
मेने हिलती देखी हे
लेकिन भूकम्प
तुम्हारे घर के नीचे भी है
बचो ! बाहर आ जाओ
जख्म तुम सह नहीं सकोगे।



अश्रु

एक बूद
अश्रु की
गालो पर लुढ़क कर
किधर गई ?

झरने के बहाव मे बह गई
या

समुद्र मे
पानी के साथ घुलकर
सीप बनकर

किनारे पर चमक रही है।

समर्पण

जेहाद
इन्कलाव से उठता है

इन्कलाब झडे तले बनता है
झडा
एक लक्ष्य है

लक्ष्य बुद्धि से प्राप्त होता है
बुद्धि
ज्ञान द्वारा अर्जित होती है-
ज्ञान
लगन से प्राप्त होता है

लगन
भक्ति का पर्याय है
भक्ति
विश्वास है
विश्वास समर्पण है
और
समर्पण जीवन की पूर्णता है।



पिता

पिता
तेरा शरीर
मेरे पास नही है
फिर भी तेरी छाया,
महसूस करता हूँ
मेरे दिल के आस-पास
और
अनायास ही
श्रद्धानत हो उठता हूँ

तेरी हर मुस्कराहट
तेरा हर उपदेश
मेरे कानो मे इस तरह तैर रहा है
कि
इस बीहड़ अन्धियारे वन मे भी
मैं निडर हूँ

शेर चीतो की गुर्राहट
उल्लू की डरावनी आवाज
मतवाले हाथी की चिंघाड़
मुझे
बिल्कुल चिंतित,
नहीं कर रही है

तेरे ज्ञान की ज्योति
अपने मन मन्दिर मे सजाये

शान्ति
जो
मेरी मजिल है
पाने को बढ़ा चला जा रहा हूँ

दु ख
मेरे
कदम-कदम पर छाये हुए हैं

फूलो की तरह चुन-चुनकर
अपने दामन मे,
सहजे हुए चल रहा हूँ

मेरा पथ निर्दिष्ट है
इतना ही मेरे लिये बहुत है।



मुश्किलें

मुश्किलें
हिमालय पर्वत की तरह
मेरा रास्ता
रोके हुए हैं

मुझे
आगे बढ़ने से
रोक नहीं सकेंगी।

चिराग की रोशनी
जिसे
मैंने देखा है

जीवन के अँधियारे
बुझा
नहीं सकेंगे।

परचम

भक्ति का परचम
जहाँ होता है
बन जाता है
मन्दिर वहाँ

सत्य की पुरवाई मे
गुञ्जता है
पवित्रता का नाद
ओर
फैल जाता है
स्नेह का आकाश

तब
जन्म लेता है
धरती के हृदय मे
एक सरल,
सुन्दर,
सुकोमल अस्तित्व ।



प्रेम

प्रेम को

सत्य की जमीन
और
यथार्थ का धरातल चाहिऐ

तभी
स्नेह अकुर फूटेगे
और
आकाश का रग पिघलेगा

मौत का सन्नाटा
अव
सहा नही जाता ।

अबोध सूरज

समय की झुर्रियों मे सिमटा
वक्त का अबोध सूरज
काल के गराल को
सह नहीं सकता

वह कौन बिन्दु है
जहाँ से
स्नेह का उद्भव होता है
वह कौन सा पल है
जिसमें
ओस की बूँदो से तृप्त
सृष्टि
नहाती है
प्रेम के समुद्र में
और
वहा देती है
अनगिनत पुण्यो का फल

जिससे
सचित होता है
पृथ्वी का
अविचल,
अविकल,
अनवरत अस्तित्व

मैंने पाया है
सदा
गहराता हुआ गहरा
घृणा का आँचल

जो
छिटका देता है दूर-दूर तक
मेरी
मासूम खुशियो को
जिन्हे
मै
पाना चाहती हूँ
इस तरह
काल का अर्बुज पन्ना
कौन पढ़ता है

मैं,
तुम
या
वह

रग

दु ख मे जो अपने हैं
वे महान् हैं

काँटो मे जो फूल खिलते हैं
अमूल्य होते हैं

हर रग
हर मौसम की तरह
अपनी अलग अनुभूति देता है

रगो की निश्चित सीमा
मानव को कुठित कर दती है

विशाल मानव मन
जिसमे विशाल हृदय आन्दोलित होता है
विशालता की अपेक्षा करता है

सूर्य के आगे हाथ रखने से
प्रकाश नही रुकता ।

मेरे मन

मोसम

मौसम को पिघलने मत दो
ताप
अभी और सहना है
उन निष्णात् बिन्दुओ को
जहाँ से प्रेपित हुई थी
सत्य की जल धारा
और बन गया एक सैलाब
जिसमे डूब गई इन्सानियत की आवाज
और उभर आई
एक सख्त, कठोर, पत्थर की चट्टान
जिसके होठो पर लिखा था -"कुछ नही" ।
तन सना था
झूठ के गहरे घावो मे
जिन पर शून्य की बर्फ ठहरी हुई थी

आकाश को
धरती पर ही टिका रहने दो
कहाँ जायेगा ?
प्रदूषण
आकाश की तकदीर है
धरती का क्या दोष ?
जो होना है वह होगा
किसी को क्या मिलेगा
वक्त की धारा मोड़ कर ।



प्रेम भावनाएँ

निराकार तुम

तुम
याद आते हो
तब
बहुत याद आते हो

मन
प्यार के समुद्र मे डूबता हुआ
तुममे
समाधिस्थ हो उठता है

तब
निराकार तुम
साकार
मुझमे समा जाते हो ।



भावना

तुमने
जो कहा
मैंने भी वही कहा
भावना
लौ की तरह जल कर
एकाकार
हो गई
कथ्य
निरर्थक बनकर मिट गया
तथ्य को
अवलम्ब कहाँ ?

सत्य का प्रमाण
दृश्य
श्रव्य और
स्पर्श मे है
तुम
मेरी कल्पनाओ का बाना हो
जिसे मैने नित नवीन अनुभूतियो से बुना है

सृष्टि का आधार
भावना ही है
जिसने कल्पना बनकर
सत्य का वरण किया है ।



महान्

हवाऐं
जब भी
तुम्हे छू कर आती हैं
कहती हैं

जीवन
सुन्दरता है
नियति का वरदान है
सृष्टि का सौरभ है
स्नेह की गरिमा है

हिम्मत तोड़कर निराश मत हो
आग से तपकर ही
सोना बनता है

अपना सब कुछ त्याग कर व्यक्ति
महान् बन जाता है।



राम

राम सत्य है
सत्य जीवन है

जीवन दुनियॉ है
दुनियाँ प्यार हे

प्यार
विश्वास है

विश्वास
शिव है

शिव सगीत है

सगीत
जीवन है

अन्यथा
सब
मृत्यु है ।



बुझे हुऐ कोयले

बुझे हुए कोयले
फिर चेतन होगे

राम नाम के बीज से
धरती मे अकुर उगेगा

बजर भूमि मे स्त्रोता फूटेगा

सत्य मेरा पथ है
प्रकृति मेरी पूजा है
नाद मेरा सगीत है

आकाश मेरा पिता है
धरती मेरी माता है
वृक्ष मेरे सहचर है
पोधे मेरे शिशु है

मुझे कोई अभाव नही ।



पुराने जमाने की हवा

मैं
वहुत पुराने जमाने की हवा हूँ
गुजर गई तो हाथ नही आऊँगी
वेदो की ऋचाऐ, हवन के बोल, साध्य गीत
मुझ मे उच्चारित हैं
कला, बुद्धि, ज्ञान और दर्शन का भडार हूँ
सत्य मेरा धर्म है
न्याय मेरी परीक्षा हे
अन्याय मैंने नही किया
सदा सहा है
इसलिए कि
बुजुर्ग कहते थे
"वड़ो का आदर करो
उनका कहना मानो"
अव
तिरस्कार और अपमान उनकी आदत वन कर
पूर्णत मुझ पर छा चुकी है
तो मेरा विवेक जाग उठा हे
स्वाभिमान कहता है
घी, कपूर, चदन की सुवासी सुगध मे तेरा वास था
इस अपमान की कालिमा को छोड़ कर चली जा
मैने मिट्टी के भगवान को नही
साक्षात् की उपासना की है
अव
भक्ति का वरदान मागने का समय आ चुका है
वर दे प्रभु ।

